सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल। (LEFI,Chennai)

जनवरी-फरवरी, 2003

सच्चा धन सच्ची सामर्थ की संज्ञा

मरकुस(१२:४२-४४) ' इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर तांबे के दो छोटे छोटे सिक्के डाले जिसका मूल्य लगभग एक पैसे के बराबर होता है। तब यीशु ने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा, 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि कोष में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है; क्योंकि अन्य सब ने अपनी बहुतायत में से डाला है, परन्तु इसने अपनी दरिद्रता में से जो कुछ उसका था अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।'

यीशु ने देखा कि धनी लोग कैसे अपनी बढ़ाई करते हुए भेंट चढ़ा रहे थे। उन्होंने आभारी मन से नहीं दिया, यह नहीं सोचा कि परमेश्वर ने उन्हें इस योग्य किया कि इस महान उद्देश्य में सहभागी हो सकें। अब उस विधवा को देखो, गणित के अनुसार उसने शत प्रतिशत दिया और वह उस धनी की भेंट से बहुत बढ़कर था। परमेश्वर देने वाला हाथ नहीं बल्कि उसके पीछे देने वाले हृदय को देखता है। उस विधवा ने परमेश्वर को घूस देने के उद्देश्य से दान नहीं दिया।

परमेश्वर को विधवाओं का खास ध्यान रहता है। वह विधवा के घर का तेल था जो परमेश्वर ने कई गुणा किया। वह विधवा ही थी जो टूटे हुए मन की थी, जो परमेश्वर को स्वीकार

सच्चा धन...पृष्ठ २ पर...

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

१इतिहास (२९:११,१२)' हे यहोवा, महिमा, सामर्थ्य, गौरव, विजय एवं ऐश्वर्य तेरे ही हैं, क्योंकि आकाश और पृथ्वी में की समस्त वस्तुएं तेरी ही हैं, हे यहोवा राज्य तेरा है और तू ही सभों के ऊपर प्रधान एंव महान् ठहरा है। धन एंव प्रतिष्ठा दोनो तुझ ही से प्राप्त होते हैं और तू सभों पर राज्य करता है, और सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और प्रत्येक को महान करना एंव सामर्थी बनाना तेरे ही हाथ में है।'

दाऊद कहता है महिमा, महानता और सामर्थ परमेश्वर के गुण हैं। सामर्थ्य परमेश्वर के हाथ से मिलती है। चीन का पुराना नेता 'माओ' कहता है, 'शक्ति बन्दूक की नाली से मिलती है।' इसलिए जब नौजवानों ने आज़ादी के लिए प्रदर्शन किया तो वे क्या निकाल कर लाए? वे बन्दूकें और तोप ले कर आए। ये चीन के बूढ़े व्यक्ति आज भी संसार के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश का बन्दूक के दम पर दमन कर रहे हैं। जबकि पूर्वी यूरोप में साम्यवाद विफल हो गया है। यह बड़ी अश्चर्य की बात है कि हमारे देशों में, जहाँ गरीब और उत्पीड़न पाया जाता है, साम्यवाद ने जड़ पकड़ी हुई है। तो जहाँ भी शोषण, घूसखोरी और धोखाधड़ी है, साम्यवाद कहता है, 'मैं चैंपियन हूँ।' - नहीं - शक्ति परमेश्वर के हाथ से मिलती है। यह सबसे पहली बात है जो तुम्हें जाननी चाहिए। लोग शक्ति चाहते हैं। तुम इस संसार के कुछ भागों में लोगों को देखते हो, जो सेनाओं के, सरकार के विरोध में खड़े हैं क्योंकि वे शक्ति चाहते हैं।

तुम उन लोगों को देखते हो जो चुनाव के द्वारा सरकारी पदों पर पहुँचते हैं, वे शक्ति का दुरूपयोग करते हैं, सरकारी धन को बरबाद करते हैं। लोग केवल ताकत चाहते हैं। वे सोचते हैं, पैसे से ताकत आती है। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से सोचते हैं कि शिक्षा से ताकत मिलती है। एक तरह से यह ठीक है, जब तुम शिक्षा पाते हो, तुम्हारी सोच समझ खुल जाती है। तुम भविष्य के लिए योजना बना पाते हो। लेकिन मुझे यह नज़र नहीं आता कि शिक्षा इस संसार की समस्याओं को सुलझा रही है।

ऐसी शक्ति है जो परमेश्वर के हाथ से प्राप्त होती है और दाऊद इस शक्ति के विषय में बात कर सकता है क्योंकि दाऊद ने अपने सभी दुश्मनों पर विजय पाई और उसका एक दुश्मन था, उसका अपना शारीरिक स्वभाव। वह परमेश्वर के पास गया और बोला, 'मैंने केवल तेरे ही विरूद्ध पाप किया है, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है वही किया है, इसलिए तू अपनी बात में खरा, और न्याय करने में सच्चा ठहरता है।' भजनसंहिता (५१:४) उसने अपने आप को अपंग देखा। 'तेरा न्याय दुष्टता और व्यभिचार के विरूद्ध स्पष्ट है। मेरा पाप मुझे कभी नहीं भूलता। मैं अपने बिस्तरे पर आंसूओं में तैरता हूँ।', उसने कहा। जब पाप हमारे अन्दर प्रवेश करता है तो ताकत नहीं रहती।

और बाइबल कहता है, 'मैं परमेश्वर के आत्मा द्वारा सामर्थ्य से भरा हूँ और न्याय से, और शक्ति से, कि याकूब के पाप उसे याद दिलाऊँ और इस्राएल को उसके पाप।'मीकाह(३:८) आज कल लोग चिकनी चुपड़ी बाते करते हैं। कभी-कभी प्रचारक भी ऐसा करते हैं। वे जोकर और अभिनेता बन गए हैं। वे उनको केवल मुस्कराना और खुश करना चाहते हैं - केवल इतना ही। यह खुशी क्या है? क्या यह सच्ची खुशी है? सच्ची खुशी मन की पवित्रता के साथ आती है। सच्ची खुशी तब मिलती है जब तुम परमेश्वर के विरूद्ध और अपने पड़ोसी के विरूद्ध पाप नहीं कर रहे हो। देखो आजकल लोग कैसे संघर्ष में हैं - पारिवारिक संघर्ष, अधिकारियों के बीच संघर्ष और संबंधों में संघर्ष। क्या तुम्हारे मन में विरोधी झुकाव है - कोई घृणा, कुछ कड़ुवाहट, कुछ कठोर शब्द, कोई बदले की भावना, कोई

सच्ची सामर्थ...पृष्ठ २ पर....

सच्ची सामर्थ...पृष्ठ १ से....

घाव, अपने पड़ोसी के विरोध में कोई बात? जहाँ प्रेम नहीं है, वहाँ तुम कैसे शक्ति पा सकते हो। तुम प्रेम और पवित्रता के बिना शक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।

यहाँ पर नबी कहता है। 'मैं शक्ति से भरा हूँ। किसलिए? अपने लोगों को उनके पाप दिखाने के लिए।' तुम जानते हो कि ऐसे शल्यचिकित्सक के पास जाने का कोई लाभ नहीं यदि वह ऐसा कहे, 'हाँ, हो सकता है, तुम्हें कैंसर हो। शायद किसी न किसी रूप नें वह है और हो सकता है कि तुम दो सप्ताह में मर जाओ।' ऐसे डाक्टर को कौन चाहता है? कौन ऐसी बिमारी की जानकारी चाहता है। तुम ऐसे व्यक्ति को चाहोगे जो कहे, 'कैंसर यहाँ है और मैंने इसके आसपास की जगह भी साफ कर दी है।'

तुम कैसे प्रचारक को चाहते हो? मज़ाकिया, लोगों का मनोरजंन करने वाला, मसखरा, अभिनेता ! सारे संसार में मैं ऐसे लोगों को पाता हूँ जो मसीह की कलिसिया का नाश कर रहे हैं। प्रेम के साथ सत्य को बोलने के लिए वे शक्ति से नहीं भरे हैं। वे सच नहीं बोल सकते। ऐसा है तो तुम्हें प्रचार मंच पर खड़े नहीं होना चाहिए। तुम उस दफ्तर में, अस्पताल में, फैक्टरी में काम नहीं कर सकते, यदि तुम सच को सच और झूठ को झूठ नहीं कह सकते, धोखेबाजी को धोखेबाजी, कर चोरी को कर चोरी। क्या तुम चोरी को उसके सच्चे नाम से नहीं पुकार सकते?

तो लोगों को हम सरकार से चोरी करते हुए देखते हैं - अपने दफ्तरों से कागज़ की, कापी-पेन की चोरी। उनमें सामर्थ्य नहीं है। यदि वे किसी चीज़ को देखते हैं तो चुराना चाहते हैं। 'मैं अपने लोगों को उनके पाप दिखाने के लिए सामर्थ्य से भरा हूँ।'

जनजातिवाद एक कालदोष है जो हमें दुबारा उन काले युगों में ले जाकर जीने पर दूभर करता है। यदि तुम आदिवासी हो, यदि तुम अपने को उच्च जाति का सोचते हो या तुम अपने छोटे से समूह या छोटे से गुट या अपनी जाति के विषय में सोचते हो तो तुम अपरिपक्व, पढ़े लिखे बौने हो। कितने लाखों लोग हैं जो तीर्थयात्रा के द्वारा अपने पापों को धोने की कोशिश करते हैं, यहाँ धोना वहाँ धोना ! लेकिन तुम वापस और अधिक गंदे होकर आते हो।

तुम्हारे अन्दर सच बोलने की सामर्थ्य नहीं है। कहाँ कैंसर है, तुम्हारे अन्दर यह कहने का ताकत नहीं है। तुम अपने माता-पिता को उनकी कब्र में और नरक में भेजना चाहते हो। तुम सारे देशों को नरक की आग में झोंकना चाहते हो क्योंकि तुम प्रभु यीशु मसीह की घोषणा करने से डरते हो, केवल एक नश्वर है जिसने कहा, 'मैं ही सत्य हूँ।' कोई और नश्वर कभी ऐसा नहीं कह सकता जैसे न्याय से और सच्चाई से यीशु ने कहा, 'मैं ही सत्य हूँ।'

तुम यीशु की घोषणा करते हुए डरते हो। तब तुम्हारे पास कोई शक्ति नहीं है। बाइबल हमें यह भी बताता है, 'न बल से, न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा...ज़कर्याह(४:६)' तो यह कैसी शक्ति है जो आदमी की सामर्थ्य से बढ़कर है? यह पवित्र आत्मा है। वह आत्मा जो यीशु मसीह को मरों हुओं में से दुबारा जीवित कर लाया- पवित्र आत्मा। किसे पवित्र आत्मा दिया गया है? पतरस ने कहा, 'उन्हें जो उसकी (परमेश्वर) आज्ञा का पालन करते हैं।' आजकल ऐसे भी लोग हैं, जो झूठे हैं, जो अपनी पत्नी को पीटते हैं और कहते हैं, वे 'पवित्र आत्मा' से भरे हैं। नासमझी। तुम किसी दूसरी आत्मा से भरे हो, पवित्र आत्मा से नहीं। लोग, जो अपनी पत्नियों को तालाक देते हैं, कहते हैं वे पवित्र आत्मा से भरे हैं। नहीं। तुम झूठ की आत्मा से भरे हो, वाचा तोड़ने और शैतान से।

दुबारा बाइबल कहता है, नहूम (१:३) 'यहोवा विलम्ब से क्रोध करने वाला और महाशक्तिशाली है, और दोषी को यहोवा दण्ड दिए बिना कदापि न छोड़ेगा। उसका मार्ग बवण्डर और आन्धी है और बादल उसके पैरों तले की धूलि है।' वह शक्ति में महान है लेकिन वह दोषी को नहीं छोड़ेगा। तो परमेश्वर की सामर्थ्य तुम्हें न्याय में लेकर आएगी। एक दिन तुम इस धरती के न्यायधीश को देखोगे। उस दिन तुम्हारे मंत्रोच्चारण, तुम्हारे धूपदान और तुम्हारा सारा धार्मिक कचरा तुम्हें नहीं बचा पाएगा। परमेश्वर दुष्ट को नहीं छोड़ेगा। वह शक्ति में सामर्थी है।

पतरस से यह प्रश्न पूछा गया, 'किस अधिकार द्वारा तुमने इस लंगड़े व्यक्ति को चलने लायक बनाया?' पतरस ने यह जवाब दिया, 'तो तुम सब को और समस्त इस्राएल के लोगों को मालूम हो जाए कि यीशु मसीह नासरी के नाम से - जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया और जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिला उठाया - इसी नाम से यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला-चंगा खड़ा है। - प्रेरितों के काम(४:१०)' तो जब तुम खड़े होते हो तो कौन महिमा पाता है? सारे के सारे शरीर को, प्राण और आत्मा को, शुद्धि, आज़ादी, छुटकारा, - पवित्र आत्मा द्वारा मिला। पतरस कहता है, 'यह लंगड़ा व्यक्ति, उस सामर्थ्य से जो यीशु को मरों हुओं में से उठा लाई और उसी के नाम में जो मरों हुओं में से जीवित हो उठा।' तुम क्या सोचते हो, मैंने कैसे छुटकारा पाया? तुम क्या सोचते हो मैंने यह अद्भुत शान्ति कैसे पाई है? तुम क्या सोचते हो मैं नशा खोरों और नशे का धन्धा करने और लालचियों को कैसे बदलता हूँ, जब तक के वह समाज के लिए आशिष न बन जाएँ? यीशु मसीह द्वारा जो सारे आशीर्वाद, पवित्रता और सामर्थ्य का स्त्रोत है। परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।

- जोशुआ दानियल।

.....सच्चा धन...पृष्ठ १ से

है। याकूब (१:२७)'हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं की व्यथा में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।' यह विधवा आभार से भरी थी।

परमेश्वर में कोई घृणा, द्वेष और अविश्वास नहीं है। धनी लोगों का बड़ा अलग नज़रिया है। उनके पैसे ने उन्हें आत्म संतुष्टि में डूबो दिया है और इस कारण उनके गुण दब गए हैं। परमेश्वर धनी व्यक्ति को उसके धन से कहीं मूल्यवान मानता है। परमेश्वर तुम्हारे व्यक्तित्व, जीवन या प्रचार पर निर्भर नहीं करता, लेकिन वह तुम्हारे विश्वास को देखता है। मसीह परिवारों में कितने नौजवान हैं जो कम उम्र में ही मर जाते हैं। उन्होंने परमेश्वर की परवाह नहीं की और विश्वास में नहीं बढ़े और अब वे बिमारी का सामना नहीं कर पाते। उनकी मृत्यु कितनी बड़ी हानि है। धनी व्यक्ति के गुण बढ़ नहीं पाए क्योंकि वे उसके धन के नीचे दबे रह गए और इस संसार के लाभ के लिए जो योग्यताएँ परमेश्वर ने उसे दी हैं वे भी छिपी रहती हैं।

किस प्रकार हडसन टेलर और जोन वैसली ने अपनी आत्मिक क्षमता को बढ़ाया और वह

सच्चा धन...पृष्ठ ३ पर....

मिश्नरी प्रेम

एक मिश्नरी जीवन का बुलावा प्रेम का बुलावा है और उससे आता है जिसका नाम ही प्रेम है। यह बुलावा न केवल हमारे सच्चे प्रेम को जो मसीह की ओर है दर्शाता है, बल्कि आत्मत्याग द्वारा नज़र आना चाहिए। मिश्नरी के जीवन पर मसीह का पहला हक है और बाकी सारे संबंध दूसरे स्थान पर हैं और उससे निचले स्तर पर - ताकि उचित रूप से परमेश्वर की सिद्ध इच्छा पूरी की जा सके, कई मौकों पर शारीरिक प्रेम को पाने में देरी या उसके बिना भी रहना पड़ सकता है। शारीरिक आकर्षण परमेश्वर की ओर से नहीं है। कितनी बार शैतान लोगों को ऐसी शादी में ले जाता है जहाँ मिश्नरी कार्य का सवाल ही पैदा नहीं होता। दूसरी ओर, अनुभव ने यह सिद्ध किया है कि शादी एक मिश्नरी को बनाती या खोती है। उन लोगों में जिनके जीवन में परमेश्वर की इच्छा यह है कि वे अविवाहित जीवन बिताएँ, कई मिश्नरी सेवकों ने मिश्नरी क्षेत्र में यह पाया कि उसका मसीह की ओर प्रेम, उस एकाकी के जीवन को दूर करने के लिए काफी है जो जीवन साथी न होने के कारण होता है। जब केन्द्र मसीह हो, प्रेम अपनी चरम सीमा पर होता है। वह सबकुछ समेटे है। किसी ओर प्रकार के प्रेम से जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। वह मनुष्य की जानकारी से परे है। ऐसा विवाह के विषय में नहीं कहा जा सकता। विवाह परमेश्वर की सिद्ध इच्छा का स्थान नहीं ले सकता। लेकिन यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो, सिद्ध प्रेम, विवाह का स्थान ले सकता है।

जो नाश होते हुए लोगों के जीवन की सोच के बोझ से दबे हैं और यह सोचते हैं कि वे मिश्नरी काम नहीं पर पाएँगें वे भी संसार में सुसमाचार पहुँचाने के लिए काफी कुछ कर सकते हैं। यह वे लोग हैं जो ओरों को भेजते हैं। और परमेश्वर उनको जो 'पीछे सामान के साथ' हैं, उतना ही आवश्यक मानते हैं और इनाम लायक समझते हैं, जो मिश्नरी क्षेत्रों में जाते हैं। क्या जो जाता है भेजने वाले से ज्यादा महत्वपूर्ण है? नहीं।

यदि परमेश्वर एक आदमी या औरत को घर पर रोकना चाहे। तो वह व्यक्ति मिश्न स्थल पर न तो सुरक्षित और न ही खुश होगा। उसकी इच्छा तुम्हारे लिए चाहे जाने की हो या पीछे रूकने की, तुम्हें पूरी तरह से पवित्रता और पवित्र आत्मा से भरे रहना चाहिए नहीं तो तुम उसकी सिद्ध इच्छा पूरी नहीं कर पाओगे। एक दोहरे मन या दोहरे विचारों वाला व्यक्ति मसीह को अपना सबकुछ नहीं सौंप सकता।

जो प्रेम में सिद्ध है उसे कई आशिष प्राप्त होती हैं। शांति, आनंद और बहुतायत का जीवन - ये सारे इच्छा योग्य लाभ हैं। लेकिन यह केवल आरंभ है, एकदम नज़दीकी लक्ष्य और दूरगामी लक्ष्य नहीं है, जिनका सामना आज कलिसिया को करना पड़ रहा है। आज प्रेम की सबसे बड़ी जरूरत है कि जिन लोखों लोगों ने उद्धार नहीं पाया है मसीह उन तक पहुँचाया जाए.

- चुना गया।

.....सच्चा धन...पृष्ठ २ से

संसार पर आशिष सिद्ध हुए। कितने सारे लोग जो अपने जीवनकाल के मध्य में धनी बन गए, वे परमेश्वर के राज्य के लिए बेकार साबित हुए। कुछ ने विवाह में धन प्राप्त किया और कुछ ने अपने लक्ष्य के अनुसार पाया। अपनी सहायता के लिए उन्होंने उस धन को पाया। यह सत्य है कि वे परमेश्वर के काम के लिए वे धन देते हैं। लेकिन वे स्वंय परमेश्वर को समर्पित नहीं हैं। इस विधवा ने अपना सब कुछ दे दिया।

किसने परमेश्वर के विचारों को जाना है? क्या तुम जानते हो तुम्हारे लिए उसने कितना दिया? यदि तुम जानते, तो तुम सबकुछ दे दोगे। तुम अपने को खाली कर दोगे। 'मटके को खाली कर दो और कुप्पी में से तेल निकाल लाओ' परमेश्वर के जन ने कहा। तुम देखोगे वह दुबारा भरेगा। कैसे मसीह उस विधवा के बेटे के पास पहुँचा। लेकिन परमेश्वर को उसका ध्यान था। उसने नबी को उसके पास भेजा। वह आया कि मृत्यु को जीवन में, दुख को आनंद में बदले। आओ निराशा तुम्हें हताश न करे। जब तुम्हारे सब साधनों का अन्त होगा, वह परमेश्वर का समय है - परमेश्वर के लिए मौका।

जब तक तुम्हारे पास कोई हल है, किसी चीज़ पर निर्भरता, तुम उसी दिशा में देखते रहोगे। लेकिन जब निर्भर होने के लिए कुछ भी नहीं है, तब तुम उस विधवा की असहाय स्थिति में पहुँचोगे, उस विधवा के टूटे फटे मन वाली स्थिति में और तब वह परमेश्वर के लिए मौका होगा। उस विधवा का भविष्य बड़ा अनिश्चित था। लेकिन परमेश्वर ने उसका भविष्य बनाया। जब तुम्हारी सहायता के लिए कोई नहीं होगा तो परमेश्वर तुम्हारी सहायता करेंगें।

एक बार साधु सुन्दर सिंह रेगिस्तान में रास्ता खो बैठा। उस असहाय स्थिति में उन्होंने परमेश्वर को पुकारा। उन्हें अपने चारों ओर रेत के अलावा कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। तब एक व्यक्ति आया और बड़े नम्र वार्तालाप में लग गया, जिससे उसकी थकान जाती रही। जल्द ही वे एक गाँव तक पहुँचे और वह व्यक्ति ओझल हो गया। सुन्दर जानता था कि वो एक स्वर्गदूत था।

परमेश्वर के दूत सदा उन पर ध्यान लगाए रहते हैं जो हताश हैं। यह परमेश्वर का उद्देश्य बिलकुल नहीं है कि कोई भी निराशा में मरे। परमेश्वर ने तुम्हारे लिए महान योजना रखी है। जब तुम एक निराशा की स्थिति में पहुँचोगे तो परमेश्वर की महिमा देखोगे। अपने मन को नम्र रखो तब तुम परमेश्वर की आशिष देखोगे और उसके साधन तुम्हारे लिए कई गुणा हो जाएँगें।

- स्वर्गीय श्रीमान एन दानियल।

सत्य की परख!

मरकुस (१६:१५,१६) - और उसने उनसे कहा, 'तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।'

पृष्ठ ३

चित्रकार और जिप्सी लड़की

कई साल पहले 'डूस्लड्रोफ' नामक शहर में एक स्टीनबर्ग नामक चित्रकार रहता था।

वह मसीह के क्रूस पर लटके होने के दृश्य का एक महान चित्र बना रहा था, वह ऐसा इस कारण नहीं कर रहा था कि यीशु मसीह से उसे सच्चा प्रेम या उस पर विश्वास था, बल्कि पैसा और ख्याति पाने के लिए कर रहा था।

एक खूबसूरत सुबह स्टीनबर्ग जंगल में घूमने फिरने निकला, वहाँ अचानक उसकी नज़र टोकरी बुनती जिप्सी लड़की पर पड़ी। वह सामान्य से अधिक सुन्दर लड़की थी और इस चित्रकार ने उसकी एक नाचती हुई स्पेनी महिला के रूप नें चित्र बनाने की ठान ली। उसने 'पेपीटा'(जिप्सी लड़की का नाम) से सौदा तय किया वह उसकी चित्रशाला में सप्ताह में तीन बार आए।

समय पर वह उसके पास पहुँची। उसने सारी चित्रशाला पर नज़र घुमाई और उन तस्वीरों को देखकर वह अश्चर्य से भर गई। उस बड़ी तस्वीर(मसीह क्रूस पर लटके हुए) पर उसकी नज़र पड़ी। बड़े गौर से उसने उसे देखा, और विस्मित आवाज़ में उस आकृति पर जो क्रूस के बीच थी उंगली से इशारा करते हुए पूछा, 'वह कौन है?'

'मसीह', ध्यान न देते हुए उसने जवाब दिया।

'उसके साथ क्या किया जा रहा है?'

'वे उसे क्रूस पर लटका रहे हैं।'

'उसके आसपास भद्दे चेहरे वाले वे कौन हैं?'

'अब देखो,' चित्रकार ने कहा, 'मैं बात नहीं कर सकता। तुम्हें कुछ नहीं करना केवल चुपचाप खड़े रहना है, जैसा मैं तुमसे कहूँ।' लड़की ने आगे कुछ बोलने की हिम्मत नहीं की, लेकिन अश्चर्य से वह उस तस्वीर पर नज़र गड़ाए रही।

हर बार जब वह चित्रशाला में आती तो इस तस्वीर पर और अधिक मोहित होती।

दुबारा उसने एक और सवाल पूछने की हिम्मत की, क्योंकि वह उस तस्वीर का अर्थ समझना चाहती थी।

'उन्होंने उसे क्रूस पर क्यों लटकाया? क्या वह बहुत बुरा था?'

'नहीं, बहुत अच्छा।'

एक बार की बातचीत में वह इतना ही जान सकी, लेकिन यह उसकी जानकारी को उस अद्भुत दृश्य के बारे में बढ़ाने लगा।

आखिरकार, यह देखते हुए की वह उस दृश्य के विषय में जानना चाहती है, स्टीनबर्ग ने एक दिन उससे कहा, 'सुनो, एक बार में मैं तुम्हें सबकुछ बता देता हूँ, इसके बाद कोई और सवाल नहीं पूछना।' उसने उसे क्रूस की कहानी सुनाई - पेपीटा के लिए वह कहानी नई थी, हाँलाकि उस चित्रकार के लिए बहुत पुरानी कि उसका चित्रकार पर कोई असर नहीं था। वह मृत्यु की वेदना के चित्र बना सका, लेकिन उसके मन पर उसका कोई असर नहीं था, लेकिन पेपीटा का मन अपने उद्धारकर्ता के बलिदान को देखकर दर्द से भर गया। उसकी आँखों में आँसूं भर आए, वह बड़ी मुश्किल से अपनी भावनाओं को काबू में कर सकी। चित्रशाला के आखिरी दौरे पर वह उस बड़ी तस्वीर के सामने खड़ी हुई, जाने की सोच कर दुखी हुई, 'आओ', चित्रकार ने कहा, 'यह है तुम्हारा पैसा और उसके ऊपर एक सोने का सिक्का।'

'धन्यवाद स्वामी,' और फिर चित्र की और मुड़कर बोली, 'तुम्हें इससे बहुत अधिक प्रेम होना चाहिए क्या यह सच नहीं, जब उसने इतना कुछ तुम्हारे लिए किया है?'

स्टीनबर्ग पेपीटा को जवाब नहीं दे पाया, उस लड़की का मन उदास था और वह अपने लोगों के पास चली गई, लेकिन उसके शब्द स्टीनबर्ग के दिल में तीर की भाँति चुभ गए। परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने उस जिप्सी लड़की के द्वारा इससे बात की। वह उन शब्दों भुला नहीं सका। 'सबकुछ तुम्हारे लिए' उसके कानों में गूंजते रहे। वह बेचैन और उदास हो गया। वह जानता था कि वह उस क्रूस पर चढ़े यीशु से प्रेम नहीं करता था। वह परमेश्वर की शांति को नहीं जानता था।

कुछ समय बाद, स्टीनबर्ग कुछ गरीब लोगों के पास पहुँचा, जो एकाँत स्थान पर बाइबल पढ़ने और सुसमाचार सुनने के लिए इकठ्ठा हुए थे। वहाँ पर वह पहली बार ऐसे लोगों से मिला था, जिनमें यीशु पर सच्चा विश्वास था। वहाँ पर उसे यह समझाया गया कि मसीह को पापियों के लिए क्रूस पर क्यों जाना पड़ा। उसने यह जाना कि वह पापी है, और इसलिए मसीह उसके लिए वहाँ पर है, उसके पापों का बोझ उठाए। इस प्रकार परमेश्वर ने चित्रकार को उद्धार का ज्ञान दिया और वह मसीह के प्रेम को जान पाया और कह सका, 'उसने मुझसे प्रेम किया और अपने आप को मेरे लिए बलिदान किया।'

अब वह दूसरों से इस अद्भुत प्रेम के संदेश को बाँटने की गहरी इच्छा से भर गया, लेकिन वह इसे कैसे पूरी करे? अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया। वह चित्र बनाएगा। परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह सहायता करे, उसने ऐसे चित्र बनाए जैसे पहले कभी नहीं बनाए थे और वे चित्र दूसरे चित्रों के बीच 'डूलस्ड्रोफ'की विख्यात चित्रशाला में रखे गए। चित्र के नीचे उसने यह शब्द लिखे, 'यह सबकुछ मैंने तुम्हारे लिए किया, तुमने मेरे लिए क्या किया?'

एक दिन स्टीनबर्ग ने पुराने वस्त्र पहने एक लड़की को बिलखते हुए देखा जो उस तस्वीर के सामने खड़ी थी। वह पेपीटा थी।

'हे, स्वामी, यदि उसने मुझसे इतना अधिक प्रेम किया है तो ...', उसने रोते हुए कहा।

तब चित्रकार ने उसे बताया कि कैसे वह उसके लिए मरा, बेचारी गरीब नन्हीं जिप्सी लड़की और साथ-साथ अमीर लोगों और बड़े लोगों के लिए भी। स्टीनबर्ग अब उसके सवालों का जवाब देते हुए थकता नहीं था। वह बताने में उतना ही उत्सुक था जितना वह जानने में उत्सुक थी - मसीह के प्रेम को। जैसे उसे वह बताया गया उस लड़की ने वैसे ही ग्रहण किया और उस कमरे से उद्धार पाकर निकली, खुशी से भरी, उस अद्भुत प्रेम से भरी। इस प्रकार परमेश्वर ने पेपीटा के शब्दों द्वारा चित्रकार को अपने निकट बुलाया और फिर चित्रकार का उपयोग कर अपने आपको पेपीटा पर उजागर किया।

इसके काफी समय बाद, एक धनी जाना माना व्यक्ति उस चित्रागार में आया, और ध्यान से उस चित्र को देखने लगा और उस चित्र के नीचे लिखे शब्दों को, परमेश्वर ने उसके हृदय से बात की। वह काउंट ज़ीनज़ेनड्रोफ था - जो उस दिन से एक सच्चा मसीह बन गया और मोरावियन मिश्न का संस्थापक, जिसके द्वारा परमेश्वर हजारों आत्माओं को अपने पास लाए।

-चुना गया।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।

मृत्युंजय ख्रिस्त